हिंद स्वराज त्रिदीप सुहृद गुजराती में समाज विज्ञान
किरण देसाई भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम और राजनीतिक
संकट धीरूभाई शेठ भ्रष्टाचार योगेश अटल ज्ञान की
सामाजिक उपयोगिता और सुर्दहिया मणींद्र नाथ ठाकुर
लोकतंत्र का भिक्षुगीत बद्री नारायण औपनिवेशिक
काल में दलित पौरुष चारु गुप्ता राज्य, जन आंदोलन
और प्रतिरोध कमल नयन चौबे सलवा जुडूम और न्याय
का लोकतंत्रीकरण इंद्रजीत कुमार झा समकालीन हिंदी
उपन्यास और पारिस्थितिकीय संकट रोहिणी अग्रवाल
राष्ट्रीय ध्वज और आस्था की नज़र मदन झा मंटो
की दो कहानियाँ हिलाल अहमद हबीब तनवीर का
रंगकर्म अमितेश कुमार महादेवी की मीरां अनामिका
समकालीन भारत में नागरिकता का मानचित्र अंकिता
पाण्डेय हिंदी वर्चस्व और मैथिली आंदोलन मिथिलेश
झा भारत में मतदान व्यवहार संजय कुमार मीडिया तो
मंडी में, लेकिन दर्शक कहाँ? तृप्ता शर्मा पार्थ के आगे
जहाँ और भी हैं आदित्य निगम संस्कृत की आधुनिकता
राधावल्लभ त्रिपाठी राष्ट्रवाद का प्रति आख्यान और
पटरी से उतरी हुई औरतों का यूटोपिया अभय कुमार दुबे
वैचारिक नवोन्मेष की धाराएँ राकेश पाण्डेय मौलिक
चिंतन के बारे में श्री अरविंद विचारों का स्वराज कृष्ण
चंद्र भट्टाचार्य क्या चिंतन का कोई भारतीय तरीक़ा है?
ए.के. रामानुजम खेलते खेलते ज़िंदगी गिरीश कारनाड

स्वर्ण जयंती
CSDS 50
विकासशील समाज अध्ययन पीठ

प्रतिमान समय समाज संस्कृति
जनवरी-जून, 2013 | प्रवेशांक

वाणी प्रकाशन

भारतीयभाषा कार्यक्रम (सीएसडीएस) और वाणी के प्रकाशन

भारत का भूमंडलीकरण की बुनियादी मान्यता यह है कि अमेरिका की राजनीतिक-आर्थिक चौधराहट और यूरोप की सभ्यतामूलक विश्व-दृष्टि के तहत संचालित यह प्रक्रिया भारतीय लोकतंत्र के संस्थापक मूल्यों और संरचनाओं को बेहद रफ्तार और निर्ममता से बदले दे रही है। यह संकलन इस अवश्यंभावी परिवर्तन की शिनाख्त करता हुआ उसकी आलोचना और विकल्पों की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी.एस.डी.एस.) द्वारा प्रायोजित लोकचिंतन ग्रंथमाला की इस तीसरी कड़ी में भूमंडलीकरण की राष्ट्रातीत परिघटना के संदर्भ में भारत को देखने की बजाय भारत के राष्ट्रीय और एशिया के सभ्यतामूलक संदर्भ में उस परिघटना को परखने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक की दिलचस्पी भारत के भूमंडलीकरण, उसके परिणामों और हश्र में है। भारत में भूमंडलीकरण पर बहस उसके समर्थकों और विरोधियों में बँटी हुई है। दोनों का अखाड़ा अर्थतंत्र है। लेकिन, बीच में एक ऐसी जगह भी है, जहाँ दोनों खेमों के असंतुष्ट आपस में मिलते हैं। इस बीच के इलाके में संस्कृति और राजनीति के प्रश्न तैरते रहते हैं जिनके ऊपर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता। भारत का भूमंडलीकरण इसी गुंजाइश की देन और इसी कमी को पूरा करने का एक यत्न है।

भारतीयभाषा कार्यक्रम (सीएसडीएस) और वाणी के प्रकाशन